ISSN No. 2349-4654
नाद - नर्तन जर्नल ऑफ डांस एण्ड म्यूज़िक वर्ष : 1, अंक : 2, दिसम्बर 2014

पंजाब का लोक संगीत

डॉ. गुरुशरन कौर
सीनियर असिस्टेंट प्रोफेसर, संगीत विभाग, माता सुन्दरी कॉलेज
दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

सार-संक्षेप

प्रत्येक प्रान्त का सामाजिक एवम सांस्कृतिक जीवन उसके लोक गीतों से ही व्यक्त होता है। जहाँ तक पंजाब प्रान्त का सम्बन्ध है वहाँ लोक संगीत का अपना एक समृद्ध भंडार है। पंजाब प्रदेश को जहाँ इसकी शूरवीरता के लिए, धन धान्य के लिए तथा अन्य विशेषताओं के लिए जाना जाता है। वही इसके लोक गीत भी अपनी अनोखी मस्ती और उल्लास के लिए जगत प्रसिद्ध है। पंजाबी लोक गीतों मे यूँ तो अनेक प्रकार है, किन्तु सरलता के लिए इन्हें निम्नलिखित वर्गों मे बांटा जा सकता है। 1. त्यौहारों और मेलों सम्बन्धी गीत, 2. लोक गाथायें, 3. वीर गाथाएं, 4. सामान्य जीवन से सम्बन्धी गीत, 5. नृत्य गीत, 6. अन्य गीत प्रकार।

इस लेख का उद्देश्य यह है कि कुछ गिने-चुने लोक गीतों को लेकर उनका सिंहावलोकन किया जाए साथ ही ग्लोबलाईजेशन में इस्लामी व पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव आना स्वाभाविक सा हो गया है। जिन्होंने पंजाब लोक संगीत में अपनी सभ्यता का मिश्रण कर दिया है इसलिए लोक संगीत की जड़े कमज़ोर होती जा रही है। जो लोक संगीत के लिए घातक हो रही है। पश्चिमी तर्जों को आधार बना कर लोक गीत गाये जा रहे हैं उसमे रैप, पॉप आदि का प्रभाव है और इस वर्तमान मे आने वाले बदलाव व लोक संगीत के असली विकास की आवश्यकता की चर्चा करने की चेष्टा की है। आज औद्योगीकरण के विकास के कारण जिन्दगी की मासूमियत, मिलना-जुलना और आपसी प्रेम खत्म होता जा रहा है। लोक रोजगार पाने के लिए गाँवों को छोड़कर शहर व विदेश जाने में ज़्यादा रुचि रखते है और हर व्यक्ति अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा है एवं संयुक्त परिवारों में यह लोक गीत किस तरह पनपते थे इस बात पर भी चर्चा की गई है भारतवासी होने के नाते पंजाबी सदा आशावादी रहे है। पुस्तकों व आधुनिक संचार माध्यमों और इलैक्ट्रानिक मीडिया ने चाहे हमारे लोक संगीत को बहुत प्रसिद्धि दी, उसे संभाला पर लोक गीतो का असली विकास तो साधारण जनता से जुड़ा है, जो कि आज भी मनोरजंन हित रूह की खुराक का माध्यम है। आज इसे विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य सेवी संस्थाओं, सरकार, कम्पनियां तथा सामान्य संगीत प्रेमियों को उपरोक्त दुष प्रवृत्तियों का मिलकर बहिष्कार करना चाहिए और इस विषय पर सेमिनार और कार्यशालाओं का आयोजन करना चाहिए।

शोध-पत्र

लोक संगीत किसी स्थान विशेष की सभ्यता का मूल आधार है। जिसमें स्थान विशेष की भाषा, रीति-रिवाज़, वेशभूषा का दर्शन होता है। जैसा कि लोक संगीत यानि आम लोगों द्वारा रचित लोक गीत, लोक धुने, लोक वाद्य और लोक नृत्य का समूह ही लोक संगीत है। साधारण जनता का संगीत पीढ़ी-दर-पीढ़ी आगे बढ़ता हुआ एक विराट रूप ले लेता है और समाज का एक अभिन्न अंग बन जाता है। प्रत्येक प्रांत का लोक-संगीत भिन्न है। पंजाब का लोक संगीत, पंजाब के लोगों के जन जीवन पर आधारित है, जिनमें इनके स्वभाव की मूल रुचियाँ शामिल है। व्यवहारिक रूप में देखें तो पंजाबी लोक संगीत की कोई परम्परा नहीं बल्कि यह माझा, मालवा, दोआबा, पठिआर, मुलतान आदि पंजाबी स्थानों के लोक संगीत के अन्दाज़ में भिन्नता है, जिसका सम्मिलित रूप ही पंजाबी लोक संगीत है।

यह लोक संगीत मानव जीवन का अनिवार्य अंग है। आम भाषा में कहा जाता है कि जीवन यापन के लिए रोटी, कपड़ा और मकान की अवश्यकता होती है, उसी तरह जीवन के हर एक रस का आनन्द लेने के लिए संगीत सर्वोत्तम है। लोक संगीत मानव के जीवन के प्रारंभ से अन्तिम पड़ाव तक साथ रहता है एवं पंजाबी अपने जीवन का हर पहलू नाचते, गाते व्यतीत करते हैं। इसीलिए सभी भावों के गीत लोगों के मन में उठते रहते हैं और उन गीतों को अलग-अलग संस्कारों, उत्सवों, मेलों और त्यौहारों को मनाते हुये गाते हैं। यही गीत शैलियों का रूप धारण करते हैं। तो इस प्रकार लोक गीतों की भिन्न-भिन्न शैलियाँ हैं। ये शैलियाँ बहते पानी की तरह निरन्तर चलती रहती हैं। सबसे पहले मां की लोरियों से संगीत की शुरुआत होती है। बल्कि बच्चा माँ की बातों से नहीं, अपितु संगीत की धुन के अन्तर्गत नींद की अवस्था का आनन्द लेता है। जहाँ लोरी रिश्ते के मोह प्रगट करती है वहीं लय, ताल के साथ जोड़ती चलती है। जैसे-जैसे बच्चा युवा अवस्था में आता है तो उसकी रूचि लोक गीतों के साथ जुड़ती रहती है जैसे—

'भंडा भंडारिया किनां कु भार,
ईक मुठ्ठी चुक लै दूजी तियार
या
कोटला छपाकी जिमें रात आई ऐ
जेहड़ा अगड़-पिछड़ देखे ओदी शामत आई ऐ।'

ये लोक खेलें जहाँ बच्चों के मन को बहलाती हैं वहीं बच्चे सारा दिन सांगीतिक बोलों के साथ खेलते हैं और वहीं उनके मानसिक विकास में भी वृद्धि होती है।

युवा की अवस्था में पति और पत्नी के अलग-अलग कार्यों का भी संकेत मिलता है।

अलड़ बलड़ बावे दा
बावा कनक लिआवेगा
बावी बैठी छटेगी
तंद पूनीया बटेगी
बावी मन पकायेगी
बावा बैठा खावेगा। [1]

इस गीत से लोक संस्कृति झलकती है, औरत और आदमी के जीवन व्यवहार में कार्यों को किस प्रकार बांटा जाता है उसका संकेत हमें इस लोक गीत से स्पष्ट झलक रहा है। लोरियाँ, किस्से, कहानियाँ, गीतों और नृत्यों की छांव तले ही पंजाब का लोक गीत पनपता है। पंजाब के मिरासी, भांड, सपेरे, ढ़ाडी, बाजीगर, बहुरूपीये, कवीश्र आदि लोगों के जन्म, शादियों व मेलों पर अपनी कला से जन साधारण का मनोरंजन कराने की परम्परा प्राचीन काल से ही चली आ रही है। जब हमारे पास विज्ञान नहीं था, टैक्नोलोजी नहीं थी, लिखने की लिपि नहीं थी, तबसे मौखिक रूप से ही ये लोक संगीत हमारी धरोहर रही है।

डॉ महिन्द्र कौर गिल के अनुसार लोक संगीत का सबसे महत्वपूर्ण अंग भक्ति है। 'गुरू ग्रन्थ साहिब' ने सोहिला, मंगल पहरे, दिनरैनी, वारां, थिति, रूति, बारामाह, आरती, अंजुली, कुचजी, सुचजी, गुनवंती, वनज़ारा, घोड़ियां, बिरहड़े, अलाहुणिया, सद, छंत, वारा, मुदावनी ये सभी लोक रूप काव्य हैं।[2] महिन्द्र सिंह रन्धावा और देवेन्द्र सत्यार्थी के अनुसार 'पंजाबियों के जीवन के बीच में जो कुछ होता है, उन सभी बातों का दर्शन पंजाब लोक गीतों में निहित है जैसे बेटा पैदा होने के गीत, अझाने को सुलाने के गीत, खिदे के साथ खेलने के गीत, सास-बहू, देवर भाभी के गीत, कुड़माई और शादी के गीत, पानी भरने के गीत, कृषि सम्बन्धी गीत, पती विछोड़े के गीत, फसलें और ऋतू सम्बन्धी गीत, पंजाब की प्रेम कहानियां—हीर-रांझा, सस्सी पुन्नु, मिरज़ा साहिबा और सोहनी महिवाल के गीत, गहनों और त्यौहारों के गीत इत्यादि। इन गीतों में अभी एक चौथाई भाग ही विरचित होता है। ऐसे हज़ारों और लोक गीत हैं जिनमें समाजिक, आर्थिक, घरेलु, बाजरे की गरमी, चन चाननी, चूड़ी बेचने वालों की बातें, जम्मू की राजे रानियां और फिरंगियों के लिए गाली गलोच भी मिलता है।' इस प्रकार लोक गीतों में हर कदम पर पंजाब की यात्रा कराई जाती है।[3] यही नहीं जहाँ पंजाब अपने निवासियों की शूरवीरता, परिश्रमी एवं सम्पन्न जीवन के लिए विख्यात है, वहीं अपनी समृद्धि संस्कृति के लिए भी जगत प्रसिद्ध है। यहां के लोक संगीत में अपनी पारम्परिक स्वरालियों के आधार पर शास्त्रीय संगीत भैरवी, माधुमाद सारंग एवं तिलंग, आसा, वडहंस और सौरठ जैसे अनेक चिरंजीवी राग प्रदान किए। कुछ और लोक गीतों के उदाहरण प्रस्तुत किए जा रहे हैं—

प्रेम :- बज़ार विकेंदी खंड वे,
तू मिश्री ते मैं गुलकन्द वे,
दोवें चीजां मिठीयां, हाये ढोला।[4]

यादा ते सुनेहेः- सुलीयां टंगेई गई जान
नी तेरी सों सुलीयां टंगेई गई जान,
भली होई, भली होई, जान पछान।
उठदयां बैंदया, साडे निकलदे होके,
भुली गये घरा वालें चुल्हे ते चौंके,
रहदां नित तेरा ही ध्यान,
नी तेरी सौं, सूलीयां टंगेई गई जान।[5]

संजोग वियोग :- मांवा ते धीयां दी दोस्ती, नी माये।
कोई टुटदी ऐ कैरां दे नाल।
कनकां निसरीयां, धीयां क्यों विसरीयां, नी माये।[6]
सगी करनी दिती
फुल जड़ने दिते
निगा रखी वे विच मूरता दें
नी ना रो मायें
सानू तोरे मायें
लिखे संजोग मांयें
नाल मूरता दे।[7]

इन गीतों को घड़े या ढोलकी के साथ गाया जाता है। घड़े और ढोलकी को फुमन, रंग बिरंगे कपड़ों को काट काट कर सजाया जाता है। स्त्रियां हाथों की उँगलियों में अंगूठियाँ पहन कर घड़े को बजाते हैं। इसके अतिरिक्त गागर का भी प्रयोग किया जाता है। लम्बी हेक वाले गीतों का गायन ढ़ोलकी के साथ संभव नहीं है। इन गीतों को सामूहिक रूप में या व्यक्तिगत रूप में बिना साज़ के गाया जाता है। इन लोक गीतों में सुहाग, घोड़ियाँ, हेयरे आदि के अलावा कुछ खास जैसे सुल्तान बाबू - दिल दरया समुन्द्रों दूंगे, कौन किसे दिये जाने हू ..., ऐसे लोक गीत जो केवल तूंबी द्वारा ही प्रदर्शित होते हैं और जिनमें मानवी रिश्तों को दर्शाया गया है। मौत सम्बन्धी गीत जैसेः—

कीरने- जिथे रंड वंडया नी धीए
ओथे पल्ला मोड़ी तू पछाड़ी
रंड खंडे दी धर नी धीए।[8]

वैन- तू सानू कीहदे आसरे छड़ गई नी मैनू रखन वालीए अमड़ीए।
तू साडी कोठी दा जिंदा नी मैनू रखन वालीए।
तैनू कित्थे हुन मैं सददां नी मैनूँ रखन वालीए।
तेरे बाझों साडा है नहीं गुजारा नी मैनू रखन वालीए।

इन उदाहरणों से स्पष्ट है कि लोक गीत हमारे दुख, सुख, खुशी गमों को प्रगट करने का सबसे बड़ा साधन है। या यूं कह सकते हैं कि गागर में सागर को भरने का कार्य ये लोक संगीत सीधे और अति साधारन

भाषा में व्यक्त करते हैं। अब प्रश्न यह उठता है क्या वास्तव में पंजाब का लोक संगीत ही पंजाब की संपदा है? आज वैश्वीकरण तथा उद्योगिकरण के विकास के कारण जिन्दगी की मासूमियत, मिलना-जुलना और आपसी प्रेम खत्म होता जा रहा है। लोग रोजगार पाने के लिए गांवों को छोड़कर शहर व विदेश जाने में ज्यादा रुचि रखते हैं और हर व्यक्ति अपनी संस्कृति को भूलता जा रहा है। संयुक्त परिवारों में यह कला ज्यादा पनपती है। संयुक्त परिवार परंपरा लगभग समाप्त होती जा रही है। लड़के लड़कियां खुद ही अपने रिश्ते ढूंढ लेते हैं और कोर्ट मैरिज़ कर लेते हैं और किसी प्रकार के सामाजिक रस्मों रिवाज़ हो नहीं पाते और जबकि लोक संगीत सामाजिक पर्वों पर ही गाये जाते हैं अब यह समाप्त होते जा रहे हैं। हमारी लोक संगीत विरासत में परिवर्तन आने के मूल कारण बाहरी प्रभाव है जिनको अपनाने का समाज में व्यक्तिगत विशेष सख्त रवैया नहीं है, बल्कि उनके प्रभाव को समाज ही कबूल करता है। सीमावर्ती क्षेत्र होने के कारण इस्लामी व पश्चिमी संस्कृति का प्रभाव आना स्वभाविक सा हो गया है। जिन्होंने पंजाब लोक संगीत में अपनी सभ्यता का मिश्रन कर दिया है इसलिए लोक संगीत की जड़ें कमज़ोर होती जा रहीं हैं। जो लोक संगीत के लिए घातक हो रही हैं। पश्चिमी तरज़ों को आधार बना कर लोक गीत गाए जा रहे हैं उसमें रैप, पॉप आदी का प्रभाव है। गायन करते समय सरगमों, आलाप, तानें व मुरकीयों का प्रयोग भी नज़र आता है जबकि पहले तीन या चार सुरों का प्रयोग होता था, क्योंकि लोक गीतों को मुख्य लक्षण होता था खुला पन एवं सुरिलापन। उदाहरण के तौर पर दिलजीत दुसांझ द्वारा गया गीत 'मलकी कीमा' फिल्म साहिब बीवी और गैंगस्टर और करूक में बब्बू मान द्वारा गाया गीत जुगनी और छल्ला, फिल्म 'पूरे पंजाबी' में संजीव द्वारा गाया छल्ला, आरिफ लाहौर द्वारा गाई जुगनी और रबी शेरगिल द्वारा गाया छल्ला आदि को देखा जा सकता है:—

छल्ला ईंडिया तो आया
वे जिंदड़ी नू कम ते लाया
ओ दिल नू खिचदी माया
रात दिन टैक्सी चलाऊंदा
वे मोटे डालर कमाऊंदा
टैणे-णे-टैणे-णे-टैणे-णे'
Tell me what you thinking about tonight
I wanna do everything wanna do it right,
Maybe I could help you free your mind
Open the door and let me in...

यहाँ पहले विवाह शादियों पर रीति व रस्मों रिवाजों अनुरूप गीतों का दौर कई दिन पहले शुरू हो जाता था, कई दिन पहले ही गौण बिठा दिये जाते थे, पर आज यह रस्में डीजे लगाकर और पश्चिमी प्रभाव के गीतों के साथ ही नाच गाना हो जाता है, एक दिन में ही सारा कार्यक्रम कर लिया जाता है। जिस कारण लोक गीतों में जन साधारण की रुचि समाप्त होती प्रतीत होती है।

इस विज्ञान और ग्लोबलाईजेशन में आज के युवक अपने आर्थिक हालात सुधारने व धन कमाने के लिए लोक संगीत को व्यापार के रूप में इस्तेमाल कर रहे हैं। आज का साधारण कलाकार भी लोक गीतों को उठाकर उसे कलात्मक पक्ष दे कर स्टूडियो में जा कर थोड़े पैसे देकर अपने अपने कैसेट बनाकर रिलीज करवा लेते हैं। जिससे हानि यह हुई कि पारंपरिक धुनों का अस्तित्व खत्म होने लगा है। उसकी जगह पारंपरिक धुनों को बदल कर पेश कर दिया जाता है। पश्चिमी वाद्यों का अधिक प्रयोग चाहे जन साधरण को प्रभावित कर रहा है, पर वह स्वयं अपनी विशाल सम्पदा को हानि पहुंचाता रहा है। इस प्रभाव को अनदेखा करना कहां तक स्वीकार्य होगा और यही नहीं बल्कि टेलीविज़न, फिल्म संगीत से जुड़े कई चैनल चाहे हमारे लोक संगीत को प्रसिद्धि दे रहे हैं, पर साथ ही गीतकार लोक गीतों में फेर बदल करके पारंपरिक तर्जों में बदलाव ला रहे हैं और अपनी कलात्मकता का प्रदर्शन कर रहे हैं। लोक वाद्यों जैसे ढोल, ढोलक, नगाड़ा, तूम्बी, घड़ा, इकतारा, अलगोज़े, वझली का स्वतंत्र प्रयोग न करके असली आवाज़ को समाप्त कर उसके अनुरूप ध्वनि बजा लेते हैं और इस तरह लोक गीतों या लोक वाद्यों की मौलिकता खत्म होती जा रही है। जो कि पंजाब की लोक विद्या को बहुत बड़ा धक्का है। भारतवासी होने के नाते हम पंजाबी सदैव आशावादी रहे हैं। पुस्तकों व आधुनिक संचार साधनों और इलैक्ट्रानिक मीडिया ने चाहे हमारे लोक संगीत को बहुत प्रसिद्धी दी, उसे संभाला, पर लोक गीतों का असली विकास तो साधारण जनता से जुड़ा है, जोकि आज भी मनोरंजन हित रूह की खुराक का माध्यम है। आज पंजाब का लोक संगीत सुरक्षा का मोहताज क्यों रहे? युवा वर्ग इस विरासत को बड़ाने में बहुत अहम भूमिका निभा सकते हैं। उनसे अनुरोध है कि वो इसे विश्वविद्यालयों, महाविद्यालयों तथा अन्य सेवी संस्थाओं, सरकार, कम्पनियां तथा सामान्य संगीत प्रेमियों को उपरोक्त दुशप्रवृत्तियों का मिलकर बहिष्कार करना चाहिए और समय-समय पर प्राथमिक विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालय स्तर पर कार्यशालाओं का आयोजन किया जाना चाहिए, जिससे आने वाली युवा पीढ़ी इन लोक-गीतों के बारे में जान सके।

पाद-टिप्पणियाँ

1. महेन्द्र सिंह रन्धावा, उद्धृत : देवेन्द्र सत्यार्थी – पृष्ठ 279
2. महिन्द्र कौर गिल – आदि ग्रन्थ लोकरूप – पृष्ठ 10
3. महेन्द्र सिंह रन्धावा, उद्धृत : देवेन्द सत्यार्थी – पृष्ठ 20
4. प्रभशरन कौर, ढोलकी दे गीत – पृष्ठ 39
5. महेन्द्र सिंह रन्धावा, उद्धृत : देवेन्द सत्यार्थी – पृष्ठ 342
6. महेन्द्र सिंह रन्धावा, उद्धृत : देवेन्द सत्यार्थी – पृष्ठ 345
7. सुखदेव मादपुरी, शाबा नी बबीहा बोले – पृष्ठ 345
8. पंजाब दे लोक संगीत दा बदलदा स्वरूप, राजेश शर्मा

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

महेन्द्र सिंह रन्धावा, देवेन्द्र सत्यार्थी, पंजाबी लोक गीत साहित्य एकेडमी, नई दिल्ली, 1960

महिन्द्र कौर गिल, आदि ग्रन्थ लोकरूप, एम.पी. प्रकाशन, गीता कॉलोनी, दिल्ली, 2002

महेन्द्र सिंह रन्धावा, देवेन्द्र सत्यार्थी, पंजाबी लोक गीत साहित्य एकेडमी, नई दिल्ली, 1960

प्रभशरन कौर, ढोलकी दे गीत, गरेशियन बुक्स, पटियाला, 2011

महेन्द्र सिंह रन्धावा, देवेन्द्र सत्यार्थी, पंजाबी लोक गीत साहित्य एकेडमी, नई दिल्ली, 1960

महेन्द्र सिंह रन्धावा, देवेन्द्र सत्यार्थी, पंजाबी लोक गीत साहित्य एकेडमी, नई दिल्ली, 1960

सुखदेव मादपुरी, शाबा नी बबीहा बोले पंजाबना दे गौन, चेतना प्रकाशन लुधियाना, 2008